विशेषज्ञों ने सुझाई जल प्रदूषण रोकने और संरक्षण की राह

सुनियोजित वाटर मैनेजमेंट की जरूरत

एन बुधनकर
भू-गर्भ विशेषज्ञ

पंडित रविशंकर यूनिवर्सिटी के भू-गर्भ विशेषज्ञ प्रोफेसर एन बुधनकर ने कहा कि रायपुर की बात करें तो यहां पानी का लेवल नीचे जा रहा है। समस्या है, लेकिन इसके समाधान के लिए सुनियोजित तरीके नहीं हैं। उन्होंने कहा कि इसके लिए सबसे पहले हमें पानी की डिमांड व सप्लाई के बीच तालमेल बिठाना होगा। इसके बाद वाटर रिचार्जिंग पर ध्यान देना होगा।

हालांकि वर्तमान में इसके समाधान के लिए आर्टिफिशियल रिचार्ज सिस्टम है, लेकिन यह सिर्फ बरसात के दिनों में काम करेगा, वाकी समय के लिए यह नकाफी है। उन्होंने कहा कि लोगों को पानी के लिए अपना व्यवहार बदलना होगा। रायपुर में तो बाढ़ जैसी नौबत आ जाती है जो कि यहां कि गलत जल निकासी योजना परिचायक है।

जल प्रदूषण का मतलब बीमारियां

अभिलाषा आनंद
एक्सपर्ट, वाटर सेनिटेशन

एक्सपर्ट वाटर सेनिटेशन अभिलाषा ने कहा कि फिंगर, फील, फ्लड व फ्लाय बाहर की गंदगी को घर तक लाती हैं। गंदगीयुक्त फिंगर या माहौल में जब हम भोजन लेते हैं तो विषैले कीटाणु शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। इसके लिए हमें यह भी ध्यान देना जरूरी है कि जब भी खाना खाएं या फिर शौचालय जाएं तो उसके पहले हाथ को साबुन से अच्छी तरीके से धो लें। उन्होंने कहा कि जल की अस्वच्छता की वजह से 80 फीसदी बीमारियां होती हैं। इन्हीं से हर साल लगभग 6 लाख से अधिक लोगों की मौत होती हैं।

'रिज टू वेली' का सिद्धांत अपनाएं

अजय गुरु दीवान
विशेषज्ञ, वाटर मैनेजमेंट

वाटरशेड मैनेजमेंट फेकल्टी अजय गुरु दीवान ने कहा कि जल संरक्षण को लेकर बड़े स्तर पर ध्यान देने की जरूरत है। हम अभी से ध्यान नहीं देंगे तो आने वाले दिनों में समस्या और गंभीर होती जाएगी। हमें रिज टू वेली के सिद्धांत पर बारिश के पानी का संरक्षण करना बहुत जरूरी है।

गंगा-यमुना का पानी भी दूषित

देवेश शर्मा
प्राचार्य, अग्रसेन कॉलेज

जल का भंडार बहुत है,लेकिन इसे गंदा किया जा रहा है। गंदा पानी भू-जल स्तर तक जाएगा और एक्यूफर को गंदा कर देगा। वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम के जरिए लोग पानी की संकट से बच सकते हैं।

वाटर कंजर्वेशन के लिए कई टेक्निक

डॉ. एस श्रीवास्तव
इकाई प्रबंधक एफप्रो

एफप्रो के इकाई प्रबंधक डॉ. एस श्रीवास्तव ने कहा कि रोटी, कपड़ा व मकान की जरूरतों से सबसे अहम जल एवं हवा की जरूरत होती है। उन्होंने कहा कि जल के लिए कैस्टेड चेडैम, तालाब, एलआईएस, कंटूर बंद, कंटूर ट्रेंच, बोल्डर चेक, डायवर्सन स्ट्रक्चर, गैवियन 5 प्रतिशत मॉडल इत्यादि टेक्निक का यूज कर हम सरफेस वाटर मैनेजमेंट से पानी तो सुरक्षित कर ही सकते हैं। साथ में ग्रामीण व शहरी दोनों स्तर के ग्राउंड लेवर वाटर भी इनडायरेक्टली रिचार्ज कर सकते हैं। इस जल का यूज हम डोमेस्टिक व एग्रीकल्चर के लिए भी कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि तालाब छत्तीसगढ़ की लाइफ लाइन है, इस पर ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़ में प्रति वर्ष करीब 1400 मिली मीटर वर्षा होती है। असुरक्षित पानी को सुरक्षित बनाने के लिए वाटर सेप्टिक प्लान बनाया जा सकता है।

पानी की कमी नहीं, पर साफ जल कहां?

डॉ. दिलीप मुकुंद
प्रिंसिपल होम्योपैथिक कॉलेज

होम्योपैथिक कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. दिलीप मुकुंद पिम्पले ने कहा कि संसार में पानी की कमी नहीं है, लेकिन हमें शुद्ध पानी की आवश्यकता है। जिसे सेव करने की चुनौती हमारे सामने है। उन्होंने कहा कि लोगों को पानी को सुरक्षित रखने के लिए अवेयर करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि मैं पत्रिका समाचार पत्र समूह को बधाई देता हूं कि वे इस ज्वलंत मुद्दे पर लोगों को जोड़कर अवेयर करने में अपनी अहम भूमिका निभा रहा है।